

कृश्न चंदर

‘एक गधे की वापसी’

दर्शकगण और श्रोताओ! मैं न रूसियों का राकेट हूँ, न अमेरिकियों का पाकेट हूँ। न गली हबश खां फाटक हूँ। न मैं रमता जोगी न्यारा हूँ, न कोई बनावटी सैयारा हूँ, न किसी फिल्मी हीरोइन का प्यारा हूँ, न किसी लखपती की आंख का तारा हूँ मैं महज एक गधा आवारा हूँ, जिसे बचपन की गलतकारियों के कारण अखबार पढ़ने की आदत पढ़ गई थी। जो न कविराज गुरनामदास के हिदायतनामे से दूर हुई, न प्यारी बहन जी के इलाज से हुई।

अखबार पढ़तेपढ़ते मैं इंसानों की बोली बोलने लगा और कूट राजनीति की बातें करने लगा। इसी कारण मैंने अपना प्यारा वतन बाराबंकी छोड़ा और डंकी बन कर दिल्ली के एक धोबी से नाता जोड़ा। धोबी को अचानक एक मगरमच्छ ने खा लिया और मुझे धोबी की विधवा पत्नी अनाथ बच्चों के निर्वाह के लिए बड़ेबड़े अफसरों की सेवा में निवेदन करने पर विवश कर दिया। मैं अर्जी लेकर दफ्तरदफ्तर घूमा और मिनिस्टरमिनिस्टर पहुंचा और पहुंचते पहुंचते एक दिन सीधा पंडित नेहरू की कोठी पर जा पहुंचा। पंडित नेहरू से संयोगवश जो मेरा इंटरव्यू हो गया, उसने मुझे प्रसिद्धि के आसमान पर पहुंचा दिया। लोग मुझे घरों और क्लबों में बुलाने लगे। गलियों और बाजारों में मेरा जुलूस निकालने लगे।

एक सेठ ने समझा कि मैं कोई खुदाई फ़ौजदार हूँ या करोड़पति ठेकेदार हूँ, जिसने ऊपर से एक मासूम गधे का रूप भरा है और अंदर ही अंदर बहुत बड़ा ठेकेदार है। वह बहुत मिन्नतसमाजत करके मुझे अपने घर ले गया। अपनी फर्म का हिस्सेदार बनाने लगा, अपनी सुंदर लड़की से मेरी शादी रचाने लगा और हाई सोसाइटी में मुझे घुमाने लगा। मैंने बहुत इंकार किया, मना किया। बताया, मैं यूँ तो ज्ञानभार से लदा हूँ, किंतु दरअस्ल एक गधा हूँ। किंतु वह लालच का अंधा मेरी बात पूरी सुनने से पहले अनसुनी कर देता था और अपनी ही हांके जाता था और मेरी आवभगत किए जाता था। कुछ महीने तो बड़े ऐशोआराम से कटे, किंतु जिस दिन उस लालची सेठ को पता चला कि मेरे पास कोई परमिट है न कोटा, उसी दिन वह बेपैदे का लोटा मुझे मारने पर तुल गया और कमरा बंद करके उसने और उसकी लड़की ने मारमार कर मेरा भुरकस निकाल दिया और मुझे सख्त घायल करके बाहर सड़क पर निकाल दिया। छह मास तक मैं जानवरों के अस्पताल में पड़ा जीवन और मृत्यु के बीच लटकता रहा। पीड़ा की अधिकता से कराहता रहा।

इंसानों की बेहिंसी (हृदयहीनता) और गधों की बेबसी पर रोता रहा। किंतु ईश्वर को मेरा जीना स्वीकार था और मेरे लिए ज़िंदगी का ज़हर पीना ज़रूरी था, इसलिए मैं अच्छा हो गया। स्वस्थ होते ही अस्पताल के दयालु डॉक्टर ने मुझे अपने आफिस में बुला लिया और मेरी पीठ पर दो सेर घास लादकर कहा ‘तुम्हारे लिए यह दो सेर घास काफ़ी है, बाक़ी ईश्वर दाता है। अब तुम यहां से चले जाओ और मेरा दो हज़ार का बिल चुकाते जाओ। मैंने कहा, ‘डॉक्टर साहब, मैं एक पढ़ालिखा गधा नाकारा हूँ। इसलिए गरीब और आवारा हूँ। मैं जब तक जीऊंगा, आपके जानोमाल की दुआएं दूंगा। पर इस बिल का भुगतान नहीं कर सकता’। डॉक्टर, जिसका नाम रामअवतार था और अपने काम में बड़ा होशियार था, मेरी विवशता समझकर मुस्करा दिया और बिल को वापस अपनी जेब में डालते हुए बोला, ‘तो मेरा यह ऋण तुझ पर बाक़ी रहा। अब अगर वाक़ई तुम यह ऋण देना चाहते हो, तो सीधे बंबई चले जाओ।’



SHOUT
SHARE **IT**

मैं स्वयं दिल्ली में नहीं रहना चाहता था। दिल्ली, जिसने मेरी प्रसिद्धि की ऊँचाई देखी थी और जो अब मेरे पतन की नीचाइयां देख रही थी, अब मुझे एक आंख न भाती थी। इसलिए मैंने डॉक्टर की सलाह मान ली और बंबई जाने की ठान ली। दिल्ली से मैं रेल की पटरी के किनारे किनारे हो लिया और मथुरा पहुंचा, क्योंकि मुझे मथुरा के पेड़ खाने का बहुत शौक था। किंतु मथुरा में मुझे पेड़ों की बजाय पंडो के डंडे खाने को मिले और मैं वहां से जान बचाकर सीधा ग्वालियर पहुंच गया। उद्देश्य यह था कि तानसेन की समाधि पर जाऊं और उस महान संगीतकार के सामने अपना शीश नवाऊं कि जिसके नाम से भारत में शास्त्रीय संगीत की प्रतिष्ठा कायम है। और यह तो सब लोग जानते हैं कि आजकल भारत में केवल दो प्रकार के लोग शास्त्रीय संगीत पसंद करते हैं, एक तो तानसेन के श्रद्धालु, दूसरे गंधे। वर्ना सारी दुनिया रेडियो सीलोन सुनती है। तानसेन की समाधि पर बड़ा सन्नाटा था। एक कोने में दो मुजाविर पड़े ऊँघ रहे थे।

जमीन पर बासी हारों की पत्तियां बिखरी पड़ी थीं। थोड़ी दूर पर कुछ भेड़बकरियां फिल्मी प्लेबैक गाने वालियों की तरह मिमिया रही थीं। संगीतसम्राट की समाधि की बुरी दशा देखकर मेरे दिल को बहुत दुःख हुआ और मैंने वहीं चारों घुटने टेककर स्वर्गीय उस्ताद की सेवा में डंडवत होकर माथा टेका और फिर सिर उठाकर शुद्ध झंझोटी में एक ऐसी जोरदार तान लगाई, जिसने अर्धनिद्रित मुजाविरों को झिंझोड़ दिया। वे जागकर मेरी ओर आश्चर्य से देखने लगे और बजाय इसके कि लोग मेरे जौकेसलीम (श्रेष्ठ रुचि) बल्कि जौकेअकबर (श्रेष्ठतम रुचि) की दाद देते, जिसके सहारे मैंने स्वर्गीय उस्ताद की आत्मा को प्रसन्न करने का प्रयत्न किया था, वे लोग पंजे झाड़कर मेरे पीछे पड़ गए और मुझे डंडे मारमारकर उन्होंने वहां से भगा दिया। मैं डंडे खाकर इतना बेमजा न हुआ था, जितना यह सोचकर बेमजा हुआ कि अब इस देश में आर्ट और कल्चर का भगवान ही मालिक है, जहां एक पक्के गाने वाला दूसरे पक्के गाने वाले को अपनी श्रद्धांजलि भी भेंट नहीं कर सकता। अतः मैंने जोर की दुलत्ती झाड़ी और रास्ते में खाई देखी न खाड़ी, सीधा बंबई आकर दम लिया। यहां पर घीसू घसियारे ने मुझ पर दया की और मुझको अपने मकान पर बांध लिया।

घीसू घसियारा था बड़ा बेचारा, क्योंकि उसके बच्चे थे ग्यारह। वह घास का एक गट्ठा अपने सिर पर लादता था और चारा मेरी पीठ पर और रोज़ पहुंच जाता था जोगेश्वरी में दूध बेचने वाले ग्वालों के पास। जो उसकी घास के गट्ठे खरीद लेते थे और उसे उसका मूल्य दे देते थे। जिसे लेकर वह सीधा जोसफ डिसूजा की झोंपड़ी में जाता था और जाते ही एक पच्चा ठर्रे का चढ़ाता था और अपने दोस्त रमजानी क़साई और करनैलसिंह टैक्सीड्रायवर से गप्प लड़ाता था। मैं झोंपड़े के बाहर नारियल के पेड़ों के नीचे हरीहरी घास चरता था और शुक्र करता था कि आखिर मुझे आराम की जिंदगी मिली। बंबई में आकर मैंने इंसानों की बोली त्याग दी थी, क्योंकि अनुभव ने मुझे बता दिया कि इंसानों की दुनिया में वही लोग प्रसन्न रह सकते हैं, जो गंधे बनकर रहें। बुद्धिमान का यहां गुजारा नहीं, क्योंकि अच्छा परामर्श किसी को प्यारा नहीं। इसलिए मैं इंसानों की बोली से हज़र (अरुचि) करने लगा और जानवरों की जिंदगी बसर करने लगा; जैसे बंबई में वे सब लोग बसर करते हैं, जिनके लिए पैसा ही प्यारा है और जिन्हें केवल अपना ऐशोआराम दुलारा है।

छह महीने में मैं हरीहरी घास खाकर ख़ूब मोटा हो गया। मेरी काली खाल चिकनी हो गई और मेरे अय्याल (बाल) पर सेहत का रंग चमकने लगा और मैं एक सुंदर गधा बन गया, जिस पर कोई भी गंधी मुग्ध हो सकती थी। और यह तो कोमलांगियों की कमजोरी है कि वे सदा सुंदर गधों पर मुग्ध होती हैं। चिकनी खाल पर उनकी जान जाती है, चाहे उसके अंदर भुस ही भरा हो। इधर कुछ असें से दोतीन गंधियों ने मुझ पर डोरे डालने शुरू किए। किंतु इनमें जो सबसे अधिक कोमल और मादक भावभंगिमा वाली थी, वह मुझ से बिल्कुल बातचीत नहीं करती थी। इसलिए मेरा दिल बारबार उसकी ओर खिंचा चला जाता था और एक विचित्रसा आकर्षण मेरे दिल में उसके प्रति

अनुभव होता था। उसके कान लंबे, पतले, सुडौल और सुनहरे बालों वाले थे; और जिस तरह वह अपने छोटेछोटे सफेद दांतों से हरी दूब चरती थी, उस पर मेरा दिल लोटपोट हो जाता था।

वह दूसरी, भूखीचटोरी गधियों के समान घास पर पिल नहीं पड़ती थी, बल्कि बड़े धैर्य से एक घास खा कर अलग हो जाती थी और बुरी घास को सूंघ कर अरुचि से छोड़ देती थी। इससे मालूम होता था कि वह किसी अत्यंत श्रेष्ठ और ऊंचे परिवार की गधी है, जो केवल मनोरंजन के लिए गधों के इस झुंड में, जो ज़फ़ डिस्जूज़ा की झोंपड़ी के बाहर, नारियल के पेड़ों के नीचे चरने के लिए चली आती है। भूख अमीरों के लिए एक बढ़िया मनोरंजन है, गरीबों के लिए एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

एक दिन अवसर पा कर मैं उसके निकट चला गया। वह नारियल के एक झुंड के नीचे अकेली घास चर रही थी और अजब शान से अपनी दुम हिला रही थी। मैंने उसके निकट जा कर धीरे से कहा, 'ऐ सुंदरी, कब तक हम से नज़रें चुराओगी। ज़रा इधर तो देखो अपने आशिक्र की तरफ़।' 'हिश्ट!' वह अपने नथुने फुला कर बड़ी घृणा से हिनहिनाई। 'आखिर ऐसी भी उपेक्षा क्यों? मैं भी एक गधा हूँ।' मैंने कहा। 'प्रेम में हर आदमी गधा हो जाता है।' उसने ऐसे कंटीले स्वर में मुझ से कहा कि मैं एक क्षण के लिए चुप हो गया। वास्तव में वह बेहद हाज़िर जवाब गधी थी। मालूम होता था कि अच्छी शिक्षा पाई है। मैंने सोचा, अगर इससे मेरी शादी हो जाए, तो ज़िंदगी संवर जाए, वरना आम गधों की ऐसी गधियों से शादी होती है, जिन्हें घास चरने और बच्चे जनने के सिवा कोई काम नहीं आता। किंतु यह तो बड़ी विदुषी है और कर्तव्य परायण मालूम होती है।

ईश्वर ने इसे सौंदर्य के अतिरिक्त सुरुचि भी प्रदान की है। अरे! इसके साथ तो पक्कर भी देखी जा सकती है। ज़रा सोचो तो हमारे बच्चे कितने तीव्र बुद्धि के होंगे। बिल्कुल गधे तो न होंगे। मैंने उसकी ओर गर्दन बढ़ा कर कहा, 'डार्लिंग!' उसने ऐसी ज़ोर की दुलत्ती झाड़ी कि यदि मैं तत्काल ही अपनी गर्दन न मोड़ लेता, तो शायद मेरी आंख ही फूट जाती। मैं घबरा कर पीछे हट गया। उसके नथुनों से चिंगारियां निकल रही थीं। वह अग्निमय दृष्टि से मुझे ताकती हुई बोली, 'एक घसियारे के गधे हो कर मुझ से प्रेम करते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती?' मैंने घबरा कर कहा, 'तुम कौन हो?' वह बोली, 'मैं विक्टर ब्रूगांज़ा की गधी हूँ, जो जो ज़फ़ डिस्जूज़ा का 'बॉस' है और दस भट्टियों का मालिक है। गोरेगांव से दूरदूर तक उसका ठर्रा बिकता है। और मैं तुम्हारी तरह घास नहीं लादती हूँ। शराब के केवल चार पीपे गोरेगांव से लाद कर यहां जोगेश्वरी जो ज़फ़ डिस्जूज़ा के झोंपड़े तक पहुंचा देती हूँ। फिर शाम को ख़ाली पीपे वापस लेकर जाती हूँ। तुम्हारी जैसी दिन भर गधों की तरह मेहनत नहीं करती हूँ।' 'क्या बात है बेटी?'

अचानक पास ही से एक आवाज़ आई और मैंने देखा कि पकी आयु की उजली क्रिस्म की एक गधी उस जवान गधी के निकट आ गई है। 'कुछ नहीं अम्मा!' जवान गधी ने कहा, 'यह गधा मुझ से प्रेम करने चला है। ज़रा सुनो तो इसकी बात।' पकी आयु की गधी ने मुझे सिर से पांव तक देखा और बोली, 'तुम कौन हो?' मैंने बताया। सुन कर बोली, 'तुम्हारा हमारा क्या मेल? तुम हिंदू हो, हम ईसाई। कहां के रहने वाले हो?' 'यूपी का।' 'लो, तुम यूपी के, हम महाराष्ट्र के। तुम्हारा हमारा क्या जोड़? कौन जाति हो?' 'गधों की भी जाति होती है?' मैंने पूछा। 'वाह! क्यों नहीं होती? जो मालिक की जाति होती है, वही उसके गुलाम की जाति होती है, वही उसका धर्म होता है। हम जानवर लोग तो अपने मालिक के रुतबे से पहचाने जाते हैं। हम वही सोचते और करते हैं, जो इंसान करता है।' 'हालांकि मैंने तो अक्सर इंसानों को जानवर की तरह सोचते और करते देखा है, बड़ी बी।' मैंने नम्रता से कहा। बड़ी बी को मेरी बात पसंद आई।

बोली, 'तुम समझदार गधे मालूम होते हो। अच्छा, यह बताओ कि अगर मैं अपनी बच्ची की शादी तुम से करने पर तैयार हो जाऊं, तो तुम मेरी बच्ची को कहां रखोगे और क्या खिलाओगे?' 'रखने को कोई विशेष स्थान तो नहीं है, घीसू घसियारे के यहां। वह मुझे रात को घर के बाहर जामुन के पेड़ से बांध देता है, बल्कि प्रायः मुझे खुला ही छोड़ देता है, ताकि मैं इधरउधर घास चर कर अपना पेट भर लूं।' 'तो वह तुम्हें घास नहीं डालता है क्या?' 'नहीं।' 'तो इसका मतलब है कि अगर मेरी बच्ची की तुम्हारे साथ शादी हो जाए, तो उसे भी घास नहीं मिलेगी?' 'प्रेम में घास क्या करेगी? इकबाल ने कहा है 'बेखतर कूद पड़ा आतिशेनमरूद में इश्क', (बेखतर=बेझिझक, निडरता से/ आतिशेनमरूद =नमरूद बादशाह द्वारा दहकाई गई भयंकर आग) इश्क, बड़ी बी, इश्क तो इश्क है और घासघास है। मुझे देखो, इश्क भी करता हूं और घास भी खाता हूं। और कभीकभी जब घास नहीं मिलती, तो केवल इश्क खाता हूं। क़व्वाली गाता हूं 'यह इश्कइश्क है इश्कइश्क', बड़ी बी, तुम मेरी मानो, अपनी बेटी को मेरे हवाले कर दो। घास का क्या है?

यह दुनिया बहुत बड़ी है। कहीं न कहीं घास मिल ही जाएगी।' 'जी नहीं,' बड़ी बी कठोरता से बोली, 'मैं अपनी मासूम बच्ची की तुम से हरगिज़हरगिज़ शादी नहीं करूंगी। जबकि न बाप का पता, न मां का। न धर्म ठीक, न जाति दुरुस्त। जिसका कोई ठौरठिकाना नहीं, रहने के लिए कोई स्थान नहीं, खाने के लिए घास नहीं। ऊपर से पढ़ेलिखे आदमियों की तरह बात करते हो।' मैंने गर्वपूर्ण शब्दों में कहा, 'हां, मैं अखबार पढ़ सकता हूं। पर इसमें क्या बुराई है?' 'यह तो बहुत बुरी बात है,' बड़ी बी जल कर बोली, 'आजकल हिंदुस्तान में जितने पढ़ेलिखे गधे हैं, सब क्लर्की करते हैं या फ़ाक्रा करते हैं। तुम्हीं बताओ, तुमने आज तक किसी पढ़ेलिखे ठीक आदमी को लखपति होते देखा है? न भैया, मैं तो अपनी बेटी की किसी लखपति से शादी करूंगी।

चाहे वह बिल्कुल अनपढ़, घामड़ गधा ही क्यों न हो।' मुझे उस गधे की मूर्खतापूर्ण बातों पर बड़ा क्रोध आया। किंतु, चूंकि मामला इश्क का था, इसलिए मैं ज़हर का घूंट पीते हुए उसे फिर से समझाने की कोशिश करने लगा। 'देखो अम्मा, आजकल नया ज़माना है। इस ज़माने में धर्म, जातिपांति को कोई नहीं पूछता। हम सब हिंदुस्तानी हैं, हम सब गधे हैं बस, इतना ही सोच लेना काफ़ी है। यह प्रश्न राष्ट्रीय एकता का है।' 'अमीर और ग़रीब में राष्ट्रीय एकता कैसी? तुम्हारी समस्याएं अलग, हमारी समस्याएं अलग। हमारे स्वार्थ अलग, तुम्हारे स्वार्थ अलग। हमारा जीवन स्तर अलग, तुम्हारा जीवन स्तर अलग। और फिर हम तो हिंदुस्तानी भी नहीं।

हमारी तो नस्ल भी तुम से अलग है। मेरी बच्ची के दादा, खुदा उन्हें करवटकरवट जन्नत बख़्शे, विशुद्ध अंगरेज़ी गधे थे और मेरी मां फ़्रांसीसी नस्ल की थी और तुम बड़े बेसुरे, बेकार, काले हिंदुस्तानी गधे हो और चले हो मेरी बेटी से इश्क जताने। ख़बरदार! जो मेरी बेटी की तरफ़ आंख उठा कर भी देखा। दोनों आंखें फोड़ डालूंगी।' यह कह कर बड़ी बी ने मेरी तरफ़ पीठ करके इतने जोर की दुलती झाड़ी कि मैं घबरा कर वहां से भाग खड़ा हुआ और डिसूज़ा की झोंपड़ी के सामने आ कर दम लिया और उस दिन से संकल्प किया कि अब प्रेम नहीं करूंगा, क्योंकि प्रेम करने के लिए केवल इतना ही पर्याप्त नहीं है कि आदमी कवि स्वभाव रखता हो। प्रेम करने के लिए यह भी बहुत आवश्यक है कि आदमी को दो वक्रत की घास भी प्राप्य हो, वरना कोई औरत घास नहीं डालेगी। इसलिए मैंने उस परियों सी सुंदर गधे से प्रेम करने का विचार त्याग दिया और अपने जीवन को केवल घास लादने पर लगा दिया, कि जो हर गधे का भाग्य है।

दिन बड़े आराम से गुज़र रहे थे। घास लादना, घास खाना और अपने खूंटे पर जाके सो जाना। ज़िंदगी इससे सादा और क्या हो सकती है और इस दुनिया में अधिकांश लोग इससे अधिक चाहते भी क्या हैं? इस निर्दयी आसमान की चाल को क्या कहिए कि मेरी कुछ दिनों की यह शांति भी उसे सहन न हुई। पहली मुसीबत यह आई कि

गवर्नमेंट ने जनता के लिए बंबई में ख़ालिस दूध सप्लाई करने के लिए एक बहुत बड़ी डेयरी 'आरे कालोनी' के नाम से चालू कर दी। समस्त विपत्तियां इसी प्रकार के नेक इरादों से आरंभ होती हैं। अब भला बंबई में ख़ालिस दूध की किसे आवश्यकता थी? बंबई के वीर निवासियों ने स्वतंत्रतासंग्राम का सारा युद्ध ईरानियों की चाय और ग्वालों का आधा दूध और आधा पानी पीकर लड़ा, जीता और जिंदा रहे। उनके लिए ख़ालिस दूध हासिल करने का अर्थ इसके अतिरिक्त और क्या हो सकता था कि उन्हें व्यर्थ में ही निरंतर संघर्ष और लड़ाई के लिए उकसाया जाए। अतएव जिस दिन से बंबई में आरेकालोनी की नींव पड़ी, उसी दिन से संयुक्त महाराष्ट्र का किस्सा भी शुरू हो गया।

आखिर आम लोगों को ख़ालिस दूध पिलाकर वे और क्या आशा कर सकते हैं। यह ईरानियों की चाय ही थी, जो महाराष्ट्र और गुजरात में तालमेल पैदा किए हुए थी, वर्ना दूध तो सदा विभाजित करता है। पहले तो पंजाब को ही ले लीजिए। दूध पीने के अभ्यस्त थे, इसलिए विभाजन हो गया। अपराध दूध का था और अपराधी ठहराया जाता है बेचारे अंग्रेजों को। हालांकि साहब, दूध में ऐसी शक्ति है कि यदि आप कुछ न करें, उसे कुछ घंटों के लिए किसी बर्तन में अकेला छोड़ दें, तो स्वयं ही विभाजित हो जाएगा। दूध का दूध अलग, पानी का पानी अलग। मानव इतिहास में इस प्रकार की छोटीछोटी बातों से बड़े दूर के परिणाम निकले हैं।

उदाहरण के लिए सोचिए कि यदि मुहम्मद बिन क़ासिम ने हिंदुस्तान के बजाय चीन पर हमला किया होता, तो आज पाकिस्तान चीन में होता। यदि नेपोलियन पानीपत में पैदा हुआ होता, तो वाटरलू की लड़ाई में अंग्रेजों की विजय न होती। यदि कोलंबस की नाव समुद्र में डूब जाती, तो अमरीका का कभी पता न चलता और बेचारा कोलंबस अपने मुंह से ग़ालिब का यह मिसरा दोहराता, 'डुबोया मुझको होने ने, न होता मैं तो क्या होता।' इसी कारण मैं भी कहता हूं कि यदि आरे-कालोनी न बनती, तो महाराष्ट्र का पृथक प्रांत भी न बनता।

यह केवल दूध का अपराध है, दूध जो विभाजित करता है। बंबई के शरीफ़ लोग लगभग एक सौ वर्षों से ईरानियों की फीकी-सीठी चाय पीते चले आ रहे थे। अब उन्हें जो ख़ालिस दूध पीने को मिला, तो उनका हाज़मा बिगड़ गया। और जब जनता का हाज़मा बिगड़ता है, तो वह तरहतरह की मांगें करने लगती है। 'हमें महाराष्ट्र चाहिए। हमें काम चाहिए। हमें रोटी चाहिए और हर चीज़ उतनी ही सस्ती और बढ़िया चाहिए, जितना कि आरेकालोनी का दूध है।' इसीलिए पुराने ज़माने में जो लोग राज्य चलाते थे, वे जनता की किसी आवश्यकता को कभी पूरा नहीं करते थे। इससे जनता का हाज़मा हमेशा ठीक रहता था। किंतु अब वह इतना बिगड़ चुका है कि किसी प्रलोभनपूर्ण वादे के चूर्ण से ठीक नहीं हो सकता।

आरे कालोनी के बन जाने से जहां एक तरफ़ लोगों का हाज़मा बिगड़ा, वहां दूसरी तरफ़ निजी तौर पर दूध बेचने वाले ग्वालों की 'ग्राहकी' भी कम हो गई और सैकड़ों ग्वाले बेकार हो गए। उन्होंने अपना हर संभव प्रयत्न 'ग्राहकी' को क़ायम रखने के लिए कर डाला। कभी दूध का भाव कम किया और पानी अधिक मिलाया, कभी घास का भाव कम किया और घसियारे को जा दबाया। कभी पानी की मात्रा कम की और हानि अधिक उठाई। किंतु आरे -कालोनी के सामने उनकी एक न चली। आरे-कालोनी का दूध अधिक मशहूर होता गया और प्राइवेट व्यापार करने वाले ग्वाले अपने ऊंचे लाभ से हाथ धोने लगे। यदि वे बिल्कुल ख़ालिस दूध बेचते और आरेकालोनी से ज़रा कम दाम पर बेचते, तो अब भी वे थोड़ासा लाभ कमा सकते थे। किंतु यह तो व्यापार के विरुद्ध है और हमारी जीवनव्यवस्था में उस समय तक व्यापार नहीं हो सकता, जब तक किसी एक चीज़ में किसी दूसरी चीज़ की मिलावट न की जाए। उदाहरणार्थ - दूध में पानी, साहित्य में उरयानी (नग्नता), आटे में बुरादा, घृणा पर धर्म का लबादा, घी में तेल, शासन में रिश्त का मेल। यह तो व्यापार का पहला नियम है।

जब ग्वालों का दूध बिकना बंद हो गया, तो घीसू घसियारे की घास बिकनी बंद हो गई, तो घर में घीसू घसियारे और बीवी-बच्चे के फ़ाँके लगने शुरू हो गए। स्थिति इस सीमा तक नाज़ुक हो गई कि एक दिन जोज़फ़ डिसूजा की झोंपड़ी में घीसू घसियारे ने मुझे बेचने की सोच ली। यह तरकीब उसे रमज़ानी क़साई ने सुझाई थी। कहने लगा, 'अगर तुम इस गधे को मेरे हाथ बेच दो, तो मैं तुम्हें इसके पच्चीस रुपए दे दूंगा।' जोज़फ़ बोला, 'हां, ठीक तो कहता है रमज़ानी। आजकल तुम्हारी घास कहीं नहीं बिक रही है। इसलिए तुम इस गधे को रखकर क्या करोगे? फिर सात रुपए मेरे बाक़ी हैं तुम पर। वे भी इसी रक़म में से कट जाएंगे।' मैं दरवाज़े के निकट सरक आया और अत्यंत मौन होकर उनकी बातें सुनने लगा। घीसू बोला, 'इस बेचारे गधे का कोई ख़र्च तो है नहीं मुझ पर। खुद ही दिन में इधर-उधर से घास चरकर मेरे घर के बाहर आके पड़ा रहता है। दिन-भर मेरे बच्चे इसकी सवारी करते हैं। और एकआध घास का गट्ठा बिक ही जाता है।

रमज़ानी बोला, 'वह एक-आध गट्ठा तुम खुद अपने सिर पर लाकर बेच सकते हो। तुम खुद सोच लो। पूरे पच्चीस रुपए दूंगा। और वह भी दोस्ती में दे रहा हूं, वरना यह गधा तो पंद्रह रुपए में भी महंगा है।' घीसू बोला, 'तुम इस गधे को लेकर क्या करोगे?' रमज़ानी एक आह भरकर बोला, 'इस दुनिया में जीना बहुत मुश्किल हो चला है। आजकल भेड़बकरियां ऐसी दुबलीपतली आ रही हैं कि एक के अंदर से तीन सेर गोश्त भी मुश्किल से निकलता है। अब यह तुम्हारा गधा खासा हट्टा-कट्टा और मोटा-ताज़ा हो रहा है। इसका गोश्त बहुत ही बढ़िया निकलेगा।' 'तो तुम गधे का गोश्त बेचोगे।'

घीसू ने आश्चर्य से पूछा। 'हां, बकरी के गोश्त में मिलाकर बेचूंगा।' रमज़ानी बोला। 'बकरी के गोश्त में मिलाकर बेचोगे।' घीसू हैरत से चिल्लाया।

'इसमें हैरत की क्या बात है?' रमज़ानी ने ज़रा गुस्से से कहा, 'तुम्हारे ग्वाले क्या दूध में पानी डालकर नहीं बेचते?' घीसू ने फिर आंखें फाड़कर कहा, 'मगर गधे का गोश्त? लोगों को पता नहीं चलेगा?' 'यह तो अपनेअपने पेशे के गुर की बात है', रमज़ानी बोला, 'मैंने ऐसेऐसे उस्ताद देखे हैं, जो बकरी के गोश्त में कुत्ते का गोश्त मिलाकर बेच देते हैं। मैं तो केवल गधे का गोश्त बेचूंगा। और फिर क़ीमे में तो कुछ पता ही नहीं चलता है।

मेरी टांगें भय से सुन्न हो गई थीं। ऐसा मालूम होता था, जैसे किसी ने मेरी हर टांग के साथ चार-चार मन के पत्थर बांध दिए हैं। मैं छप्पर की दीवार के साथ दरवाज़े के पीछे लगा, यह बातचीत सुन रहा था, जिसमें मेरे जीवन और मृत्यु का निर्णय हो रहा था। मैं यह सुनना चाहता था कि आखिर घीसू क्या कहता है। एक बेज़ुबान जानवर ने इतने महीने उसके लिए प्राणपण से मेहनत की थी और बदले में घास का एक तिनका न लिया था। घीसू ने कहा, 'यह गधा मुझसे और मेरे बच्चों से बहुत हिल गया है। उसकी जान लेने का मेरा जी नहीं चाहता। थोड़ी-सी और दो यार।' 'लो पियो', रमज़ानी ने उसका गिलास भरते हुए कहा, 'परंतु उसकी जान कहां से ले रहे हो? जान लेने वाला या रखने वाला यह ऊपर वाला है', रमज़ानी ने खपरैल की छत की तरफ एक उंगली उठाकर कहा, 'तुम तो गधे को खाली मेरे हाथ बेच रहे हो।' है।

करनैलसिंह ड्रायवर ने बात पलटकर कहा, 'अबे, कल तू कहां गया था रमज़ानी? यहां नहीं आया।' 'भइया, मैं शकीला बानो गढ़वाली की क़व्वाली सुनने गया था। ज़ालिम क्या गाती है! अर्ज़े-नियाज़े इश्क़ के क़ाबिल नहीं रहा/ जिस दिल पे हमको नाज़ था वो दिल नहीं रहा।' रमज़ानी पहले गुनगुनाता रहा। फिर ज़ोरज़ोर से गाने लगा। घीसू ज़ोरज़ोर से सिर हिलाने लगा और करनैलसिंह टीन का एक खाली डिब्बा बजाने लगा। मैंने इत्मीनान की सांस ली। चलो, ज़िंदगी बच गई। आई हुई मौत टल गई।

घीसू घसियारा नशे में बोला, 'पच्चीस क्या, अगर कोई पच्चीस हज़ार भी दे, तो भी अपना गधा न बेचूं।'

‘यार, कौन तेरे गधे की बात करता है’, जोज़फ़ ज़रा क्रोध से बोला, ‘रमज़ानी का गाना तो सुनने दे।’ मगर घीसू घसियारे को चिढ़ हो गई थी। वह ज़ोर-ज़ोर से अपना हाथ हिलाते हुए बोला, ‘कोई पच्चीस लाख भी दे, तो भी मैं अपना गधा न दूँ। इस गधे ने मेरी इतनी सेवा की है, मेरी और मेरे बच्चों की, कि मैं इसे ज़िंदगी-भर अपने पास रखूँगा। कोई पच्चीस करोड़ भी दे, तो यह गधा न दूँगा। घीसू घसियारे ने आज तक किसी की जान नहीं ली। यह हमारे धर्मसास्तर के खिलाफ़ है।’

‘ले आया बीच में अपना धर्म,’ करनैलसिंह चिढ़कर बोला, ‘यार जोज़फ़, जल्दी से इसका गिलास भर दो।’ ‘कहां से भर दूँ,’ जोज़फ़ क्रोध से बोला, ‘सात रुपए की पहले ही पी चुका है। कहां तक उधार दूँगा?’ ‘भर दो, भर दो,’ घीसू ज़ोर से चिल्लाया, ‘वह भगवान देने वाला है। कहीं न कहीं से तुम्हारा क़र्ज़ भी उतार देगा।’

‘जब उतार देगा तब और पी लेना,’ जोज़फ़ बोला, ‘अब मैं एक बूंद न दूँगा।’ घीसू ने अपने ख़ाली गिलास की तरफ़ देखकर रमज़ानी से कहा, ‘मेरा गिलास ख़ाली है।’ ‘और ख़ाली रहेगा,’ जोज़फ़ कठोरता से बोला। ‘एक रुपया दे,’ घीसू ने रमज़ानी से कहा। रमज़ानी ने जेब से पच्चीस रुपए निकालकर कहा, ‘एक नहीं पच्चीस देता हूँ।’ घीसू ने एक क्षण के लिए पच्चीस रुपयों की ओर देखा। एक क्षण के लिए रुका फिर उसका हाथ हठात् पच्चीस रुपयों की ओर बढ़ गया। जल्दी से उसने रुपए जेब में डालकर कहा, ‘चलो, गधा तुम्हारा हुआ। ले भैया जोज़फ़, अब तो शराब दे दे।’ रमज़ानी मेरे गले में रस्सी डाले मुझे ले जा रहा था और लहक-लहक कर गा रहा था अर्जेनियाज़े-इश्क के क़ाबिल नहीं रहा, जिस दिल पे हमको नाज़ था वो दिल नहीं रहा।

अचानक मैंने कहा- जाता हूँ दागे-हसरते-हस्ती लिए हुए, हूँ शम्मे-कुशता दरख़ुरे महफ़िल नहीं रहा। एकाएक रमज़ानी ने चौंककर इधर-उधर देखा। मेरी तरफ़ देखा। फिर मुझे रस्सी से खींचते हुए आगे बढ़ गया। उसकी समझ में नहीं आया कि यह आवाज़ कहां से आई थी। उसके चेहरे पर मैंने भय की एक हल्की-सी झलक देखी। अब रात का झुटपुटा बढ़ रहा था और अपने हृदय के भय को दूर करने के लिए रमज़ानी ज़ोर-ज़ोर से गाते हुए मुझे ले जा रहा था और दोहरा रहा था- अर्जेनियाज़े-इश्क के क़ाबिल नहीं रहा, जिस दिल पे हमको नाज़ था वो... मैंने फिर कहा, ज़रा ऊंचे स्वर में- मरने की ऐ दिल और ही तदबीर कर कि मैं शायाने दस्ते-बाजूए क़ातिल नहीं रहा।

रमज़ानी भय से थर-थर कांपने लगा। उसने इधर-उधर रास्ते में देखा। किंतु किसी को न पाकर रात के बढ़ते हुए अंधेरे में चिल्लाकर बोला ‘कौन बोलता है?’ मैंने कहा, ‘मैं हूँ एक गधा।’ ‘तुम?’ रमज़ानी की आंखें फटी की फटी रह गईं। ‘तुम एक गधे होकर इंसानों की बोली बोलते हो?’ मैंने कहा, ‘मैंने संकल्प कर रखा था कि इंसानों की बोली कभी नहीं बोलूँगा। किंतु जब जान पर बन आती है और इंसान की कृतघ्नता सामने आती है, तो ग़ालिब के साथ कहना ही पड़ता है- दिल से हवाएक़िशतेवफ़ा मिट गई कि वां हासिल सिवाय हसरतेहासिल नहीं रहा।’ ‘लाहौल वला कुव्वत इल्लाबिल्ला।’ रमज़ानी ने ज़ोर से कहा और घबराकर उसने रस्सी छोड़ दी और फिर मेरी तरफ़ पीठ करके इस तेज़ी से भागा कि मैं उसे बुलाता ही रहा गया, ‘रमज़ानी भैया! ऐ रमज़ानी! ज़रा सुनो तो।’ किंतु उसने एक बार भी पीछे मुड़कर नहीं देखा और भय से पागलों की तरह चीखता हुआ, कुछ पढ़ता हुआ, वहां से हवा हो गया। मैं सिर झुकाकर धीरे-धीरे क्रदम रखता हुआ वापस चलने लगा और कुछ मिनट के बाद जोज़फ़ के झोंपड़े के बाहर पहुंच गया। किंतु घीसू घसियारा उस समय वहां से जा चुका था और करनैलसिंह भी। इस समय अकेला जोज़फ़ अपने झोंपड़े के बाहर लकड़ी के एक बेंच पर बैठा हुआ अंतिम ज़ाम पी रहा था।

उसने जब मुझे देखा, तो लपक कर आगे बढ़ा और मेरी रस्सी अपने हाथ में लेकर बोला, 'रस्सी तुड़ाकर अपनी जान बचा लाए? मगर बच के कहां जाओगे मियां गधे? सुबह तुमको रमजानी के हवाले कर दूंगा।' यह कहकर मुझे नारियल के पेड़ से बांध दिया। मैंने अवसर देखकर जोज़फ़ से कहा, 'जोज़फ़!' 'हांय!' वह आश्चर्य से चीखा। मैंने कहा, 'चिल्लाने की ज़रूरत नहीं। तुम एक पढ़ेलिखे आदमी हो, इसलिए मैं तुमसे बातचीत करता हूं और तुमसे कहता हूं कि मैं गधा ही बोल रहा हूं।' 'क्या मैं नशे में हूं?' उसने अपने-आप से पूछा। 'नशे में तो हो, किंतु यह बिल्कुल सच है कि इस समय तुम्हारा नशा नहीं बोल रहा, यह ख़ाकसार बोल रहा है। बचपन में मैंने इंसानों की बोली सीखी थी।' यह कहकर मैंने जोज़फ़ को अपनी थोड़ीसी विपदा कह सुनाई। वह मेरा हाल सुनकर बोला, 'गुड गॉड! बिल्कुल विश्वास नहीं आता। मगर अब तुम्हें अपने सामने बोलता सुन रहा हूं, तो विश्वास करना पड़ता है कि तुम वही प्रसिद्ध गधे हो, जिसने पंडित नेहरू से भेंट की थी। अब याद आया, मैंने उसके बारे में अख़बारों में भी पढ़ा था।

फ़र्माइए, मैं अपनी क्या सेवा कर सकता हूं?' मैंने कहा, 'रमजानी के हाथों मेरी जान बचा सकते हो?' 'वह किस तरह?' जोज़फ़ ने पूछा, 'रमजानी ने पच्चीस रुपए में घीसू ने तुम्हें ख़रीद लिया है।' 'पच्चीस रुपए में क्या तुम मेरी जान लोगे।' 'बंबई में दादा लोग तो दस रुपए में जान लेने को तैयार रहते हैं और वह भी एक इंसान की जान। तुम तो एक गधे हो। हालांकि पढ़ेलिखे हो। पर इससे क्या होता है! विश्वयुद्ध में मैं एक सिपाही था। मैंने स्वयं अपनी आंखों देखा कि लाखों इंसानों को कुछ रुपयों की खातिर ख़ून और आग की भट्ठी में झोंक दिया गया था। तुम तो महज़ एक गधे हो।' 'वे भी गधे थे', मैंने अत्यंत कड़वे स्वर में कहा, 'यदि हिसाब लगाओ तो युद्ध के मोर्चे पर इंसानों की ज़िंदगी भेड़बकरियों से भी सस्ती बिकी है। हिरोशिमा के एक बम ने कितनी लाख जानें ले ली हैं। ज़रा हिसाब लगाओ, पच्चीस रुपए प्रत्येक आदमी भी नहीं पड़े होंगे।' जोज़फ़ बोला, 'इस हिसाब से तो तुम्हें खुश होना चाहिए कि एक गधे की ज़िंदगी की क़ीमत एक इंसान की ज़िंदगी से ज़्यादा पड़ रही है।' मैंने उसकी बात अनसुनी करके कहा, 'उन लोगों ने बेकार में लाखों इंसानों को मशीनगनों से भून दिया। यदि वे उनका गोश्त बकरी के गोश्त में मिला कर बेचते, तो उन्हें अधिक लाभ होता। और लाभ ही तो वे चाहते हैं।'

तुम कैसी भयानक बातें करते हो! जोज़फ़ चिल्लाया। 'इतनी भयानक नहीं जितनी कि ज़िंदगी है, जिसमें पच्चीस रुपयों के लिए एक गधे की रस्सी दूसरे के हाथों में थमा दी जाती है।' 'तुम क्या चाहते हो?' 'मैं जीवित रहना चाहता हूं,' मैंने रुंधे हुए स्वर में कहा, 'मेरी तरह के करोड़ों लोग इस दुनिया में मौजूद हैं, जो अत्यंत भोले और कायर और निरे गधे हैं। किंतु हम सब जीवित रहने का अधिकार मांगते हैं। हममें से कोई अपने गले में रस्सी नहीं चाहता।'

'खुदाई फ़ौजदार न बनो,' जोज़फ़ बोला, 'सिर्फ़ अपनी बात करो।' 'मैं चाहता हूं कि तुम मुझे रमजानी से ख़रीद लो।' 'वाह! एक गधे की जान बचाने के लिए रमजानी को पच्चीस रुपए दे दूं, ऐसा गधा नहीं हूं मैं।' जोज़फ़ बिगड़कर बोला। 'तुम मेरी बात पूरी सुन लेते, फिर कुछ कहते,' मैंने उसे समझाते हुए कहा, 'इसमें तुम्हारा ही लाभ है। यदि तुम मुझे रमजानी से ख़रीद लोगे, तो मैं तुम्हारा ठर्रा बिना तलाशी के माहिम क्रीक पुलिस चौकी के पार पहुंचा दिया करूंगा।

अब तक तुम इस काम के लिए इंसानों से काम लेते रहे, जो कभी न कभी पुलिस के हाथों पकड़े जाते हैं। उन्हें सज़ा दी जाती है और तुम्हारी शराब पकड़ी जाती है। किंतु यदि तुम इस काम के लिए मुझे नौकर रख लोगे, तो मैं तुमसे वायदा करता हूं कि पुलिस एक बार भी मुझे न पकड़ सकेगी।'

'वह कैसे?'

'बहुत आसान काम है। किंतु इसके लिए तुम्हें अपना एक अड्डा बांद्रा में और माहिम क्रीक के बाहर माहिम के

इलाक़े में क़ायम करना पड़ेगा।' जोज़फ़ बोला, 'तुम इसकी चिंता मत करो। वहां पहले से कई अड्डे मौजूद हैं हमारे।' मैंने कहा, 'तो फिर तो इस प्रस्ताव पर कार्य करना अत्यंत सुगम है और मुझे आश्चर्य है कि आज तक किसी स्मगलर को ऐसी बढ़िया तरकीब क्यों न सूझी!'

जोज़फ़ ने बेचैनी से कहा, 'अब तुम बातें न करो। जल्दी से अपना प्रस्ताव समझाओ।' 'प्रस्ताव बहुत आसान है। तुम केवल इतना करो कि सुबह-सुबह मुझे जोगेश्वरी से बांद्रा के अड्डे तक ले जाओ।' 'अच्छा।' 'फिर वहां सुबह-सवेरे निहार मुंह मेरे ख़ाली मेदे को शराब से भर दो गले तक। मेरे मेदे और आंतों में कई गैलन शराब समा सकती है। इसलिए जब हलक़ तक शराब भर जाए, तो मुझे माहिम क्रीक तक ले जाकर छोड़ दो। वहां से मैं स्वयं धीरेधीरे एक आवाराअनाथ गधे की तरह चलता हुआ पांच मिनट में पुलिस चौकी पार कर जाऊंगा।

पुलिस को एक क्षण के लिए भी संदेह न होगा कि इस गधे के पेट में इतने गैलन शराब भरी हुई है। वे तो केवल इंसान और उसके कपड़ों की तलाशी लेते हैं। किंतु एक नंगे गधे पर, जिस पर कपड़े का एक चीथड़ा तक नहीं है, उन्हें कैसे शक होगा? अतः मैं प्रत्येक दिन पुलिस चौकी से बिना किसी भय के सुरक्षित गुजर जाया करूंगा।' 'फिर?' 'फिर माहिम के अड्डे पर पहुंचकर तुम मेरे गले में रबड़ की नली डालकर पंप के द्वारा शराब निकाल लिया करना और अपने ग्राहकों में बांट दिया करना।' 'क्या मेरे ग्राहक गधे के पेट से निकली शराब पीना पसंद करेंगे?'

मैंने कहा, 'मूर्ख हुए हो। जो लोग गंदी मोरियों में दबाई हुई बोतलों और गंदे-सड़े पीपों की शराब पीते हैं, जो लोग साइकिल के गले और पुराने ट्यूबों में ले जाई गई शराब डकार जाते हैं, उन्हें एक गधे की आंतों से निकली शराब पीने में क्या ऐतराज होगा! सुबहसवेरे मेरा भूखा ख़ाली मेदा बहरहाल गलीसड़ी ट्यूबों से तो अधिक साफ़सुथरा होगा।' 'और तुम्हें नशा नहीं होगा क्या?' 'पांच मिनट में क्या नशा होगा। माहिम क्रीक पार करने में पांच मिनट से अधिक न लगेंगे। यूँ सोचो कि मेरा पेट एक पेट्रोल ले जाने वाली लारी का बड़ा ड्रम है। बांद्रा रिस्क फिलिंग स्टेशन है। बांद्रा पर तुम इस ड्रम को भर देते हो, माहिम पर ख़ाली करा लेते हो। बहुत बढ़िया आसान, सस्ता, लाभदायक, सुरक्षित और साइंटिफिक सुझाव है।' 'गॉड ब्लैस यू।' जोज़फ़ ने एक मिनट सोचने के बाद कहा। फिर उसने प्रसन्नता से दोनों बांहें मेरे गले में डाल दीं। 'क्या तरकीब बताई है तुमने! एक स्मगलर गधा! पुलिस क्रयामत तक शक नहीं कर सकती! ... होली क्राइस्ट। मैं तो एक ही साल में लखपति हो सकता हूँ।' प्रसन्नता के आधिक्य से जोज़फ़ मेरा मुंह चूमने लगा।

'अब तो मैं ज़रूर लखपति बन जाऊंगा। अब तो मैं पच्चीस क्या, सौ रुपए देकर रमज़ानी से तुम्हें ख़रीद लूंगा।' वह इसलिए कि पहले मैं महज़ एक गधा था और अब मैं एक लाभदायक सुझाव हूँ। और जब इंसान को लाभ दिखाई देने लगे, तो एक गधे का मुंह भी चूम सकता है।' 'अन्दर आ जाओ', जोज़फ़ ने मेरी रस्सी को खींचते हुए कहा, मैं तुम्हें बाहर नारियल के पेड़ के नीचे बांधने का ख़तरा मोल नहीं ले सकता। संभव है तुम्हें सर्दी लग जाए। तुम्हारे बदन पर तो एक कपड़ा तक नहीं है।' मैंने कहा, 'दुनिया में करोड़ों बेघर गधे नंगे या अधनंगे खुले आसमान तले सोते हैं।' 'अजी गोली मारो उन गधों को! मैं तो आज तुम्हें अपने छप्पर के अंदर सुलाऊंगा।' 'किंतु छप्पर के अंदर तो बड़ी गर्मी होगी।' मैंने इठलाते हुए कहा। 'मैं आपके लिए छत का पंखा खोल दूंगा, डंकी सर!' 'जोज़फ़ ने मुझसे बड़े गिड़गिड़ाते हए कहा और फिर बड़े प्यार से मेरी गर्दन सहलाता हुआ मुझे छप्पर के अंदर ले गया।

